International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (13 – 14)

भारत में बेरोजगारी की समस्या व समाधान

शिवाली शाक्या
शा.विज्ञान एवं वाणिज्य पी.जी. महाविद्यालय,
बेनज़ीर, भोपाल (म.प्र.)

सार संक्षेप

भारत में बेरोजगारी की समस्या एक गंभीर समस्या है। शिक्षा की कमी, रोजगार के अवसरों की कमी, बढ़ती जनसंख्या, कौशल की कमी, साहसिकता का अभाव आदि ऐसे कई कारक हैं जो इस समस्या को बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं। व्यक्तिगत प्रभावों के साथ–साथ पूरे समाज एवं देश पर इस समस्या के नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं जिससे देश व समाज में असुरक्षा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और देश को इसके प्रतिकूल प्रभावों का बोझ उठाना पड़ता है। सरकार ने इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए रोजगार सृजन हेतु कई प्रकार के कार्यक्रमों का शुभारंभ किया है जैसे :– मेक इन इंडिया,स्टार्ट अप, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण, प्रधानमंत्री की समन्वित शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, रोजगार गारण्टी योजना, इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंन्ट प्रोग्राम (IRDP), लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन, मुद्रा लोन योजना, बेटी–बचाओं, बेटी–पढ़ाओं, आवास योजना, सुकन्या समृद्धि आदि। परंतु अभी तक इन योजनाओं के परिणाम पूर्ण रूप से संतोषजनक नहीं मिले हैं जिससे देश को भारी विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है एवं देश का आर्थिक विकास भी नहीं हो रहा है जिससे हमारा देश आज भी विकासशील राष्ट्रों की श्रेणी में है। सरकार ने बेरोजगारी को दूर करने हेतु कई सुविधाएँ तो प्रदान की हैं परन्तु कुछ व्यक्तियों द्वारा इन सुविधाओं का गलत उपयोग भी किया जा रहा है और इतनी सुविधाओं के बावजूद भी वे बेरोजगार बने हुए हैं। अतः सरकार द्वारा इस समस्या को नियंत्रित करने हेतु कार्यक्रमों को शुरू करना ही काफी नहीं है बल्कि उनकी प्रभावशीलता पर भी ध्यान देना जरूरी है और सरकार को आवश्यकता पड़ने पर उन्हें संशोधित करने का भी कदम उठाना चाहिए।

परिचय :–

बेरोजगारी किसी भी देश की प्रमुख बाधाओं में से एक है। भारत मे बेरोजगारी एक गंभीर समस्या है। शिक्षा का अभाव, आर्थिक साधनों का अभाव, कौशल व प्रशिक्षण का अभाव, अच्छे रोजगार अवसरों की कमी आदि ऐसे कई कारण है जो बेरोजगारी को बढ़ावा दे रहे हैं। इस समस्या का समाधान करने के लिए एवं भारत देश को विकसित बनाने के लिए बेरोजगारी को समाप्त करना अत्यंत आवश्यक है। यह केवल देश के विकास में ही बाधा उत्पन्न नहीं करती बल्कि व्यक्ति और पूरे समाज पर भी कई तरह के नकारात्मक प्रभाव डालती है। बेरोजगारी की स्थिति व्यक्ति को गलत काम करने हेतु प्रेरित करती है जब मनुष्य अधिक प्रयत्नों के बाद भी अच्छी नौकरी या व्यवसाय हासिल नहीं कर पाता है तो वह बुरी आदतों की ओर अग्रसर हो जाता है एवं गलत कार्यो में लिप्त हो जाता है जिसका दुष्प्रभाव देश व समाज को भुगतना पड़ता है।

बेरोजगारी का अर्थ होता है किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता व ज्ञान के अनुसार सही काम या नौकरी का नहीं मिल पाना। भारत में बेरोजगारी लोगों के जीवन में दो प्रकार से आक्रमण कर रही है इसमें मुख्य रूप से दो वर्ग प्रमुख है पहले वर्ग में वह शिक्षित लोग आते हैं जिनके पास अच्छी शिक्षा व डिग्रियाँ होने के बावजूद भी अच्छी नौकरियाँ नहीं हैं वे नौकरी व रोजगार की तलाश में भटकते रहते हैं परंतु वे इतना पैसा नहीं कमा पाते कि वे उससे अपना व अपने परिवार का अच्छी प्रकार से भरण–पोषण कर सकें एवं अपने बच्चों को अच्छी व ऊँची शिक्षा दिला सकें। इन्हीं कारणों से बेरोजगारी अभिशाप बनती जा रही है क्योंकि बेरोजगारी से प्रभावित व्यक्ति फिर गलत तरीकों से पैसा कमाने की कोशिश करता है एवं गलत राह पर चलकर वह अपना जीवन बर्बाद करता है जिसके फलस्वरूप कभी–कभी वह अपने समाज व देश को भी नुकसान पहुँचाने का कार्य करता है।

I. उद्देश्य :–

भारत में बेरोजगारी की स्थिति का अध्ययन करना एवं बेरोजगारी से देश में उत्पन्न चुनौतियों का मुल्यांकन कर सुझाव प्रस्तुत करना।

II. भारत में बेरोजगारी के कारण :–

1. भारत में बेरोजगारी का सबसे प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि है। जनसंख्या के आधार पर भारत विश्व का द्वितीय अधिक जनसंख्या वाला देश है अर्थात् देश की जनसंख्या इतनी अधिक है कि सभी लोगों को रोजगार मिल पाना संभव नहीं है। हमारे देश के संसाधनों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि की गति कहीं अधिक है जिसके फलस्वरूप देश का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। यही भारत देश के लिए चुनौती भी है कि उसकी आर्थिक गति में वृद्धि नहीं हो पा रही है।
2. रोजगार के अवसरों में कमी होना भी बेरोजगारी का बहुत बड़ा कारण है। देश में रोजगार के अवसर अधिक नहीं मिल पाते हैं और यदि मिलते भी हैं तो यहाँ के लोग उसका लाभ नहीं उठा पाते हैं। वे स्वयं भी किसी भी प्रकार की जोखिम नहीं लेना चाहते क्योंकि उनमें साहस व कौशल की कमी है उन्हें किस प्रकार से कैसा व्यवसाय करना है वे उसे समझ नहीं पाते हैं।

Corresponding Author : email :

International Journal of Fundamental & Applied Research
Website : www.ijfar.org ,(ISSN- 2320-7973 Volume-5 Issue -8+9 Month – November+December 2017 pp. (13 – 14)

3. हमारी शिक्षा व्यवस्था का भी बेरोजगारी में काफी योगदान है। वर्तमान समय में हमारी शिक्षा पद्धति में परिवर्तन तो हुआ है परंतु इतना अधिक नहीं। शिक्षा पद्धति में कम्प्यूटर अनिवार्य तो किया गया है परन्तु स्कूलों व कॉलेजों में कम्प्यूटर शिक्षा के लिए पर्याप्त टीचर नहीं है साथ ही स्कूलों व कॉलेजों में पढ़ाने वाले अध्यापकों की ड्यूटी बाहर या अन्य बाहरी परीक्षाओं में लगाए जाने के कारण उनकी कक्षाएँ निरंतर रूप से नहीं लग पाती हैं जिससे शिक्षा प्रभावित होती है। इसके साथ ही वर्तमान शिक्षा का आधार प्रायोगिक नहीं है। व्यक्ति स्कूली शिक्षा में जो भी सीखता है वह प्रायोगिक रूप में नहीं कर पाता है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् भी उसे अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती है।
4. बेरोजगारी का एक बड़ा कारण लघु उद्योगों का नष्ट होना एवं उनकी महत्ता कम होना है। इसके फलस्वरूप देश के लाखों लोग अपने पैतृक व्यवसाय से विमुख होकर रोजगार की तलाश में भटक रहें हैं। शासन के द्वारा उनके लिए गृह व्यवसाय खोलने हेतु बहुत से कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं किंतु फिर भी उनके पास पैसों की कमी होने के कारण वे अपना स्वयं का व्यवसाय खोलने में असफल रहे हैं।
5. भ्रष्टाचार भी बेरोजगारी का बहुत बड़ा कारण है। भ्रष्टाचार के कारण कई पढ़े–लिखे एवं योग्य व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य नहीं मिल पा रहा है जबकि इसके विपरित कम पढ़े–लिखे व अयोग्य व्यक्ति अच्छे ऊँचे पद पर अफसर बने बैठे है। ये सब भ्रष्टाचार के कारण ही हो रहा है। आज वर्तमान में ऑन–लाईन सिस्टम होने के बावजूद भी कई प्रकार की धाँधलियाँ हो रही है।

III. भारत में बेरोजगारी को दूर करने हेतु समाधान :–

1. बेरोजगारी को नियंत्रित करने हेतु सबसे पहला समाधान भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या को नियंत्रित करना है जिससे कि जनसंख्या व देश के संसाधनों के बीच संतुलन स्थापित हो सके।
2. भारत के शिक्षा के स्तर मे बदलाव व बढ़ोत्तरी की जाना चाहिए अर्थात् उन्हें स्कूल व विश्वविद्यालय का सिलेबस ऐसा बनाना चाहिए जो कि व्यक्तियों के कौशल का विकास कर सके। शिक्षा पद्धति में कुशल श्रम को विकसित करने का उद्देश्य होना चाहिए साथ ही जो विद्यार्थियों को उद्यमशीलता के बारे में प्रायोगिक ज्ञान प्रदान कर सके।
3. उद्यमी बनने व उद्योग लगाने हेतु सहायता व प्रशिक्षण प्रदान करना परंतु उनकी प्रक्रिया भी शीघ्रातिशीघ्र पूरी होने वाली होना चाहिए जिससे कि वे जल्दी से जल्दी व्यवसाय शुरू कर सकें।
4. चूंकि वर्तमान समय में अधिकांश व्यक्ति गाँवों से शहर की ओर पलायन कर रहें हैं अतः उन्हें गाँव में ही विकास करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए उनके लिए अच्छी योजनाएँ व सुविधाएँ प्रदान करना चाहिए जिससे कि ग्रामीण क्षेत्रों का भी विकास हो सके एवं वहाँ के लोगों को रोजगार प्राप्त हो सके।
5. सरकार द्वारा मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप, इज टू डूइंग बिजनेस, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना आदि तो प्रारंभ की गई हैं परंतु इन योजनाओं को लोगों द्वारा उपयोग करने के तरीकों को भी सिखाया जाना चाहिए। इसकी जानकारी प्रत्येक बेरोजगार युवक तक पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे कि प्रत्येक बेरोजगार इन योजनाओं का लाभ उठा सके एवं स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे सके।
6. मादक पदार्थो का सेवन भी बेरोजगारी के प्रमुख कारणों में से एक है। जब व्यक्ति को रोजगार नहीं मिलता है तो वह अपनी स्वयं की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता है और वह अपने दुःखो को भुलाने हेतु नशे का सेवन करने लगता है। इस कारण उसके कार्य करने व सोचने–समझने की क्षमता दिन–प्रतिदिन कम होती जाती है। वह अपने साथ अन्य व्यक्तियों को भी शामिल करने लगता है अतः मादक पदार्थो के सेवन पर सरकार को नियंत्रण लगाना चाहिए एवं इन्हें बंद करने का प्रयत्न करना चाहिए। सामान्यता मादक पदार्थो के सेवन के पश्चात् ही देश में लड़ाई–झगड़ा एवं अन्य गलत कृत्य होने की संभावना रहती है।

IV. निष्कर्ष :–

बेरोजगारी भारत देश के सामने एक विकट समस्या है। जब तक बेरोजगारी समाप्त नहीं होगी तब तक देश का आर्थिक विकास होना संभव नहीं है अतः देश की सरकार को सबसे पहले बेरोजगारी को समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। भारत देश की सरकार ने इसे समाप्त करने का कदम तो उठाया परंतु यह प्रयत्न फिर भी अधिक सफल नहीं हो सका है। वर्तमान में सरकार इस बात पर अधिक बल दे रही है कि देश के सभी युवक स्वावलंबी बनें वे केवल सरकारी सेवाओं पर ही आश्रित न रहें अपितु उपयुक्त तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर स्वरोजगार हेतु प्रयास करें। सरकार नवयुवकों को उद्यम लगाने हेतु कम ब्याज दरों पर ऋण भी प्रदान कर रही है एवं उचित कौशल प्रशिक्षण देने में भी सहयोग कर रही है। हो सकता है कि बदलते परिपेक्ष्य में हमारे देश के नवयुवक कसौटी पर खरे उतरेंगे और देश में फैली बेरोजगारी जैसी समस्या को दूर करने में सफल होंगे।

V. संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. उद्यमिता कौशल विकास – डॉ.एस.सी.जैन
2. उद्यमिता विकास – डॉ.एच.एन.मिश्रा
3. व्यावहारिक अर्थशास्त्र – डॉ.एस.सी.जैन
4. दैनिक भास्कर एवं नई दुनिया–दैनिक समाचार पत्र
5. भारत सरकार की नवीन योजनाएँ–PM Jan Aavas Yojana, Startup, make in India, PM Mudra Yojna , etc.
6. Important Magazines - India Today, Times of India & Yojana

Corresponding Author : email :